।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ईशावास्यमिदं सर्वम्। यजु0 40/1

ब्रह्माण्ड में जो कुछ है वह सब कुछ ईश्वर से आच्छादित है। अर्थात् ईश्वर ने सबको थामा हुआ है।

Whatever is there in the universe is pervaded & upheld by the Almighty Lord.

वर्ष 36, अंक 29 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 3 जून, 2013 से रविवार 9 जून, 2013 तक

विक्रमी सम्वत् 2070 दयानन्दाब्द : 189

सृष्टि सम्वत् 1960853114 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 4 तक

शिव संकल्प से होता है कल्याण

प्राचीन से प्राचीन ग्रंथ वेद शास्त्र और नवीन विद्वान् इस बात पर एकमत हैं कि मन की शक्ति बड़ी प्रबल है। मनुष्य वैसा ही बन जाता है जैसा वह विचार करता है या संकल्प करता है। दृढ़ निश्चय और संकल्प से मनुष्य निर्बल से बलवान, रोगी से स्वस्थ और मूर्ख से विद्वान् बन सकता है।

कुछ लोग यह कहते सुने जाते हैं कि क्या करें, परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल नहीं हैं, कोई हमारी सहायता नहीं करता, कोई अवसर नहीं मिलता आदि शिकायतें निरर्थक हैं। अपने दोषों को दूसरों पर थोपना कायरता का चिह्न है। लोग कभी प्रारब्ध को मानते हैं, कभी देवी–देवताओं के सामने नाक रगड़ते हैं। इस सबका कारण है अपने मन की संकल्प शक्ति को न पहचानना, अपने ऊपर विश्वास न होना।

दूसरों को सुखी देखकर हम परमात्मा के न्याय पर उंगली उठाने लगते हैं पर यह नहीं देखते कि जिस परिश्रम से, मन की अपार संकल्प शक्ति से इन सुखी लोगों ने अपने काम पूरे किये हैं, क्या वे हमने किये हैं? ईश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। उसने यह आत्मशक्ति सबको मुक्त हाथों से प्रदान की है। केवल उसको पहचानने की आवश्यकता है, जिस दिन पहचान लेंगे उस दिन से सफलता आपके चरण चूमने लगेगी।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **आर्याभिविनय** में यजुर्वेद मन्त्र (34/1) में मन की शक्ति को अपने वश में करने की प्रभु से प्रार्थना की है। मन्त्र इस प्रकार है :– **यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।**

हे परमात्मा! मेरा मन सदा शिवसंकल्प आपकी कृपा से हो, कभी अधर्मकारी न हो। यह मन जागते हुए दूर–दूर जाता है। वही मन सोये हुए भी दूर–दूर जाता है। दूर जाने का जिसका स्वभाव है। **ज्योतिषाम् ज्योतिः** अग्नि, सूर्यादि श्रोत्रादि इन्द्रिय इन ज्योति प्रकाशकों का भी प्रकाशक है अर्थात् मन के बिना किसी पदार्थ का प्रकाश कभी नहीं होता। वह बड़ा चंचल वेग वाला है। मन आपकी कृपा से ही **'शिवसंकल्प'** स्थिर शुद्ध, धर्मात्मा, विद्यायुक्त हो सकता है। अतः हे प्रभु! यह मन हमारे वश में हो जिससे हम कुकर्म में कभी न फँसे, सदैव विद्या, धर्म और आपकी सेवा में ही रहें।

मन के अन्दर अद्भुत शक्ति है। इसमें विद्युत के समान बल व चन्द्रमा के समान ओज विद्यमान है। मन की वृत्तियाँ विकीर्ण होने पर सामर्थ्य शून्य हो जाती हैं। इसी से वे विकल्प (विगत) सामर्थ्य वाली कहलाती हैं। अतः प्रार्थना करते हैं कि हमारा मन विकल्पों से दूर होकर शिव, संकल्प वाला हो। उसका उपयोग ध्वंस में न हो। अतः मन की अद्भुत शक्ति को पहचानना होगा। वेद का ऋषि कहता है कि यह मेरा मन प्रकृष्ट ज्ञान का साधक है। लौकिक ज्ञान में आँख इत्यादि इन्द्रियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आँख रूप को देखती है तो कान शब्द को सुनता है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियाँ अन्य–अन्य विषयों को ग्रहण करती हैं। परन्तु वे सब अन्तः स्थिति आत्मत्व का दर्शन नहीं कर पातीं। यह दर्शन तो मन से ही होता है। लौकिक ज्ञान में भी मन हो तो शीघ्र व सम्यक् ज्ञान होता है। मन की अनुपस्थिति में ज्ञान होता ही नहीं, उसकी विक्षिप्त अवस्था में अधकचरा– सा ज्ञान होता है। यह मन स्मरण का साधन है। मन के ठीक होने पर मैं कौन हूँ, यह स्मृति बनी रहती है। यह मन धैर्य व दृढ़ता का साधन है। यह मन वह है जो प्रजाओं के अन्दर अमर ज्योति है। इन्द्रियाँ ज्योति हैं परन्तु उनका भी प्रकाशक मन है। इस मन के बिना कोई छोटा– सा कार्य भी नहीं किया जा सकता।

यह मन अमर है, आत्मा के साथ अगले–अगले शरीर में जाता है। इसमें सब जन्म–जन्मान्तर से संस्कार निहित होते हैं, वर्तमान की बातें इस पर अपने संस्कार डाल रही हैं और आने वाली बातों का इस पर प्रतिबिम्ब सा पड़ जाता है तथा आगे होने वाली सब कल्पनाओं का उद्गम इसी में है। अतः यह मन भूत, भविष्य व वर्तमान तीनों का ही ग्रहण करने वाला है। यह मन वह है जिससे सात होताओं वाला यज्ञ विस्तृत किया जाता है। ये सात होता हैं– दो कान, दो नासिक छिद्र, दो आँख व मुख। ये सात होता व ऋषि प्रत्येक शरीर में विद्यमान होते हैं। मन के बिना ये सब अशक्त हैं। जिस समय साधक इस मन को वश में कर लेता है तब उस मन का जहाँ भी वह संयम करता है, झट उसी का ज्ञान कर लेता है। उपासना तो चलती तब है जब मन से अन्य विषयों को निकाल दिया जाये। योग दर्शन में कहा है– **"ध्यानं निर्विषयं मनः"।** मन की एकाग्रता से किया गया कर्म सुन्दर होता है।

मन मनुष्यों को न जाने कहाँ–कहाँ ले जाता है। एक ही क्षण पूर्व में है तो अगले ही क्षण पश्चिम में पहुँच जाता है। प्रथम क्षण में समुद्र तल में विचर रहा है तो अगले ही क्षण पर्वत शिखर पर पहुँच जाता है। चारों दिशाओं में भटकता है। उत्तम सारथी घोड़ों को लक्ष्य की ओर ले जाता है। इसी प्रकार उत्तम बना हुआ यह मन मनुष्य को अवश्य लक्ष्य तक पहुँचाने वाला है।

आधुनिक मनोविज्ञान के पण्डित भी यही कहते हैं कि जितनी क्रियायें हो रही हैं वे सब मनः शक्ति के कारण हैं। बिना मन के सहयोग के क्रिया होना असम्भव है। वेद भी यही कहता है–**''यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते। तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।''** अर्थात् जिसके बिना कोई कर्म नहीं होता है। विद्वानों ने एक स्वर से कहा है कि हम अपनी इच्छाशक्ति अथवा मन के विचारों द्वारा कुछ से कुछ हो सकते हैं। हमारा यह मन अमर ज्योति है। इसके महत्व को समझकर हम इसकी शक्ति के विकास के विकास के लिए प्रयत्नशील हों। हम अपने मन को शुद्ध बनायें जिससे हमारा ज्ञान बड़ी सुन्दरता से चले। मन ही विज्ञान, उपासना एवं कर्म का आधार है। आत्मस्मृति का मूल मन ही है। वह एकाग्र रहा तो मनुष्य अपने स्वरूप को देख पाता है। अतः हम बार–बार प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हम अपने इस नितान्त चंचल मन को श्रद्धा द्वारा नियन्त्रित करने वाले बनें।

अपने मन को खाली मत रखो। यदि चल–फिर सकते हो तो अपने मनोरंजन का कार्यक्रम बना लो। प्रकृति का आनन्द उठाओ, प्राकृतिक दृश्य देखो, प्राकृतिक भोजन करो, प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर उसके बनाने वाले की सुन्दरता का ध्यान करो। जिस पुस्तक के पढ़ने में रुचि है, वह पढ़ो। न पढ़ सको तो सुनो। मित्रों से वार्तालाप करो। गायन विद्या में रुचि है तो गाना गाओ, सुनो और जब कोई पास न हो तो प्रभु का चिन्तन करो। भविष्य में अपने जीवन के परोपकारमय कार्यक्रम सोचो। मन को खाली मत रहने दो। जिससे उसमें बुरे विचार आने का अवसर ही न मिले। गीता में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा था कि मन तो बड़ा चंचल है। उसे किस प्रकार वश में किया जा सकता है, इस पर श्रीकृष्ण ने कहा कि **अभ्यास और वैराग्य से मन को वश में किया जा सकता है।**

आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने अपनी पुस्तक **अमृत वर्षा** में लिखा है कि **मनुष्य के संकल्प यदि बुरे हैं तो उसे वे रोगी बना दिया करते हैं।** अंग्रेजी कवि मिल्टन ने लिखा है कि **स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बनाना केवल मन का काम है।** अतः मन को शिवसंकल्प वाला बनाने में ही कल्याण है।

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम में

प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

विस्तृत समाचार एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में

वेद-स्वाध्याय

ऋषि कौन

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानाम्। ऋषि+ स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः।। ऋ0 10/26/5

अर्थ – *(**यज्ञनाम्**)* यज्ञादि उत्तम कर्मों करे बढ़ाने वाला *(**स्थानाम्**)* रमणीय, सर्वहितकारी कार्यों में *(**अश्वहयः**)* रथ में जुते घोड़े के समान प्रेरणा देने वाला *(**विप्रस्य सखः**)* बुद्धिमानों का मित्र *(**यावयत्**)* उसके कष्टों का निवारक *(**सः ऋषिः**)* वह ऋषि है *(**यः**)* जो *(**मनुर्हितः**)* मनुष्यों का हित चिन्तन करता है।

मन्त्र में कहा गया ऋषि शब्द ईश्वर का वाचक है। वह परमात्मा यज्ञादि उत्तम कर्मों की सदैव प्रेरणा देता है। किसी अच्छे कार्य को करते समय जो आनन्द, उत्साह के भाव उत्पन्न होत हैं वे ईश्वर की ओर से प्रेरणा जानने चाहिएं। मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाले भी ऋषि कहलाते हैं। वे ***प्रत्यर्धिः यज्ञानाम्*** यज्ञ एवं सभी उत्तम कार्यों को करने में पूरा सहयोग और प्रोत्साहन देते हैं। उनका दृष्टिकोण सदा सकारात्मक ही रहता है। किसी कार्य में यदि किसी प्रकार की कोई त्रुटि है तो वे इन्हें ठीक करने का प्रयत्न करते हैं। उनक जीवन स्वयं यज्ञमय होता है जिसे देख दूसरे लोग भी उन्हीं के पद् चिह्नों पर चलते हैं। समय–समय पर प्रत्येक देश में ऐसे ऋषिकल्प महापुरुष जन्म लेते हैं जो ***अश्व रथानाम*** रथ में जुते घोड़ों की भांति किसी अच्छे कार्य में सबसे आगे बढ़ कर योगदान करते हैं। वे जाओ वह कार्य करो न कहकर आओ हम मिलकर इस कार्य करे करें, इसमें विश्वास रखते हैं। यद्यपि उनको कुछ भी कर्त्तव्य शेष नहीं रह जाता परन्तु फिर भी वे कर्म करते हैं।

यद् यदाचरति श्रेष्ठः तद् तदेवेतरो जनः। वर्तते तेन लोकोऽयं संकीर्णश्च भविष्यति।। महा. शा. अ. 220

श्रेष्ठ पुरुष जो–जो आचरण करता है, वही दूसरे लोग भी करते हैं। क्योंकि उनके कर्म त्याग देने से सारा जन समुदाय भी अच्छे कर्मों छोड़े बैठता है।

ऋषिः स यो मुनर्हितः परमात्मा सबका हित चाहता है। उसकी यह इच्छा रहती है कि सभी मनुष्य उत्तम कर्म करके मुक्ति सुख को प्राप्त करें। किसी पाप कर्म का दुःख रूप फल देने से भी यही प्रयोजन है कि आगे से शुभ किए जाएं। वह सब जीवों की भलाई चाहता है। इसी भांति जो जनता का हितकारी है उसे ऋषि कहते हैं। वह अपनी बुद्धि के द्वारा किसी कार्य के भावी परिणाम को जान लोगों को उस मार्ग पर चलने का आह्वान करता है। इसी भांति जो परिणाम में अनिष्ट या दुःखदायक हैं, ऐसे कार्य करने से मना करता है। यद्यपि वह विप्रस्य यावयत् सखः बुद्धिमानों का मित्र बनकर उनके कष्टों को दूर करता है। परन्तु इसका अभिप्राय यह कभी नहीं कि इतर जनों की उपेक्षा की जाए। समाज में जो लोग अग्रणी हैं, उनको सन्मार्ग दिखा देने पर दूसरे लोग स्वतः ही उस ओर चलतने लगते हैं। चरक सहिंतर में आप्त पुरुष का लक्षण बतलाते हुए कहा है –

रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तास्तपो ज्ञानबलेन ये। तेषां त्रिकाल्ममलं ज्ञानमव्याहतं सदः।। आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्। सत्यं वक्षयन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमः।।

चरक सूत्र 11/18/19

आप्त पुरुषों के रजोगुण और तमोगुण सेउत्पन्न दोष उनके तपोबल और ज्ञानबल से नष्ट हो चुके होते हैं। उनको शुद्ध त्रिकाल ज्ञान प्राप्त हो जाती है। उनका वचन सत्य और संशय रहित होता है।

जिस–जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस–जिस ऋषि को समाधि अवस्था में हुआ उस–उस ऋषि का नाम मन्त्र के साथ आज तक लिखा जाता है। ऋषि लोग मन्त्रों के अर्थों को साक्षात्कार कर उनका प्रचार करने वाले थे, मन्त्रकर्ता नहीं। अब भी यदि कोई समाधिरूप हो मन्त्रों का साक्षात्कार करना चाहे तो उसका ज्ञान होना सम्भव है। महर्षि दयानन्द जी वेदभाष्य करते समय कभी–कभी ऐसा करते भी थे।

विरूपास इदृषयस्त इद्म्भीरवेपसः। ते अङ्गिरसः सूनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे।।

ऋ0 10/62/5

*(**ऋषयः इत् विरूपासः**)* ऋषि विशिष्टता से किसी विषय का निरुपण या विशेष रूप से विषय को खोजने वाले होते हैं। *(**ते इत् गम्भीर वेपसः**)* वे ही गम्भीर आकृति, कर्मवाले होते हैं। *(**ते अङ्गिरसः सूनवः**)* वे परमात्मा के पुत्र सदृश होते हैं। *(**ते अग्नेः परिजज्ञिरे**)* क्योंकि परमात्मा का ध्यान करके प्रकट हुए हैं।

परमात्मा स्वयं ऋषि है और उसके द्वारा उपदिष्ट वेदवाणी का साक्षात्कार कर उसका प्रचार–प्रसार और उसमें कहे रहस्यों का उद्घाटन समाधि अवस्था में करता है वह भी ऋषि कहलाता है। वर्तमान समेंय में जो वैज्ञानिक प्रकृति के विभिन्न रहस्यों को जानने या पदार्थों के गुण–धर्मों को मिलाकर किसी वस्तु की सिद्धि में अहर्निश लगे हुए हैं वे भी ऋषि तुल्य हैं। यद्यपि पुरात ऋषियों और उनमें इतना ही अन्तर है कि पुराने ऋषि हृदय की प्रयोगशाला में बैठकर परमात्मा से सीधा ज्ञान प्राप्त करते थे इसलिए उनका निर्भ्रान्त ज्ञान होता था। आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयत्न करते हैं जैसे यूरोप में भूमि के नीचे कई किलोमीटर लम्बी कोलायडर मशीन को स्थापित करके ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कैसे हुई यह जानने का का प्रयत्न किया जा रहा है। उनका यह प्रयास स्तुत्य है परन्तु यदि सत्य सिद्धान्त सिद्ध हो सकेगा, इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। इतना को मानना ही होगा कि वे सत्य को जानने का इमानदारी से प्रयत्न कर रहे हैं।

परमात्मा के पुत्र भी ऋषि ही होते हैं। यद्यपि उनकी भाषा वैदिक भाषा नहीं होती परन्तु अपनी भाषा में जो बात वह कहते हैं वेद मन्त्रों से मिलती हुई ही होती है। यही कारण है कि सन्तों के साधारण वचन भी हृदय को छू लेते हैं और पण्डितों की लच्छेदार भाषा का भी प्रभाव नहीं होता।

– क्रमशः

राव कर्णसिंह की कृपाण के टुकड़े-टुकड़े

गतांक से आगे

थे रावकर्ण अतिशय क्रोधित, आंखों में शाणित रहा उतर।
चेहरा हो गया रक्तरंजित, मुख से अपशब्द रहे थे झर।।
हंसकर बोले ऋषिराज– 'राव! गर शास्त्र स्मर चाहो करना।
बुलवाओ रंगाचार्य जी को, कर लो संकल्प आज जी–भर'।।

'जो हारे वह स्वीकार करे, सिद्धान्त विपक्षी था समुचित'।
पर राव कोप में बर्राते , सर्वथा शब्द बोले अनुचित।।
थी तर्कहीन उसकी वाणी, बड़ रहा खड्ग पर कर प्रतिक्षण।
हंसकर बोते ऋषिराज– 'राव! सब शक्ति खड्ग में नहीं निहित।।

है करना गर शास्त्रार्थ तुम्हें, लो बुला गुरु को शास्त्र स्मर।
यदि करना है शस्त्रार्थ स्मर, है गर्व बड़ा निज ताकत पर।।
जो भिड़ो जोधपुर–जयपुर से, चल जाय पता निज शक्ति का।
टकराते क्यों संन्यासी से, अपना है शस्त्र ज्ञान अक्षर।।

खो बैठे आपा रावकर्ण, अपशब्द अग्नि का किया वार ।
कर खड्ग हस्त लपके ऋषि पर, बढ़ गया तीव्र तलवार–ज्वार।।
ऋषिवर ललकारे– 'अरे धूर्त! कह दिया धकेल धरातल पर।
फिर उठा संभल, ऋषि के ऊपर करने वाला ही था प्रहार।।

कर खड्ग हस्त, कर दिया पस्त, करके निरस्त्र पटका भू पर।
पुनि पकड़ मूठ, बल दे अटूट, कर दिए दो टूक, फेंका खंजर।।
ऋषि पकड़ हाथ बोले उससे, क्या कर प्रहार ले लूं बदला।
हुं संन्यासी, ना करूं वार, तुझ से दानव से मैं चिढ़कर।।

इस घटना समय पचासों जन, बैठे स्वामी की कुटिया पर।
दे रहे सुझाव परस्पर सब, दें पापी को समुचित उत्तर।।
दायर करना अभियोग योग्य, ऋषि बोले निज सन्तोष धर्म।
चह हुआ विमुख क्षत्रियपन से, हम ब्रह्मणत्व पर हैं स्थिर।।

– क्रमशः (श्री भगवानदास जी द्वारा रचित 'दयानन्द सागर' महाकाव्य से साभार)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

पाँचवां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक–युवतियों का परिचय सम्मेलन का पंजीकरण यथाशीघ्र कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के पांचवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार,14 जुलाई 2013 को प्रातः 10 बजे आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट –2 नई दिल्ली** में आयोजित किया जाएगा। अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें और जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र 30 जून तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक–युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। इस वर्ष इसे और व्यापक रूप देते हुए इसमें अनेक आर्यजनों ने अपना सहयोग निम्न रूप से प्रदान किया है। इन सभी महानुभावों से क्षेत्रीय स्तर पर भी सम्पर्क किया जा सकता है। **अन्तिम तिथि : 30 जून, 2013**

कार्ययोजना संयोजक
श्री गोविन्दलाल नागपाल जी
(09811623552)

संयोजक आयोजन
श्री प्रियव्रत जी
प्रधान, आ.स.ग्रेटर कैलाश–2

राष्ट्रीय संयोजक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा
(09414187428)

विभिन्न क्षेत्र के संयोजक

गुजरात
श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
(09824072509)

राजस्थान
श्री अमरमुनि वानप्रस्थ
(09214586018)

उत्तर प्रदेश
डॉ. अशोक आर्य
(09412139333)

आन्ध्र प्रदेश
श्री धर्मतेजा जी
(09848822381)

छत्तीसगढ़
श्री दीनानाथ वर्मा
(09826363578)

महाराष्ट्र
डॉ. ब्रह्ममुनि जी
(09421951904)

उत्तराखण्ड
डॉ. विनय विद्यालंकार
(09412042430)

विदर्भ
श्री कृष्ण कुमार शास्त्री
(09579768015)

जम्मू–कश्मीर
श्री राकेश चौहान
(09419206881)

हरियाणा
श्री कन्हैयालाल आर्य
(09911179073)

हिमाचल प्रदेश
श्री रामफल आर्य
(09418277714)

उडीसा
स्वामी सुधानन्द सरस्वती
(09861339060)

असम
श्री लोकेश आर्य
(09435017811)

पंजाब
श्री दिनेश आर्य
(01832333899)

महिला संयोजिका
श्रीमती वीणा आर्या
(9810061263)
श्रीमती रश्मि आर्या
(9971045191)
श्रीमती विभा आर्या
(9873054398)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म् ।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001 दूरभाष :– 011–23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org IVRS No. - 011-23488888

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

1. युवक/युवती का नाम :.....गौत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
.....

फोटो
युवक–युवती

5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
.....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
9. भाई: ..... विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : ..... विवाहित ..... अविवाहित : .....
10. मकान निजी/किराये का है.....
11. किस आर्यसमाज से सम्बन्धित हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) चिन्ह लगाएं :विधुर : ( ) विधवा: ( ) तलाक : ( ) विक्लांग: ( )
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में दें :.....
.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट: 1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 200/– का ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजने का कष्ट करें। विक्लांग युवक–युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क रु.100 /– रखा गया है। 2. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी। 3. आप इस फार्म को **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। 4. इस फार्म की फोटो कॉपी प्रति भी मान्य होगी। 5. विशेष आग्रह : अपने रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य साथ लावें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार, 3 जून से रविवार, 9 जून, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 06/ 07 जून, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 जून, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

स्वाध्याय शिविर

दिनांक 25 से 28 जून, 2013 : गुरुकुल पौंधा, देहरादून

प्रस्थान : 24 जून रात्रि 10 बजे **वापसी :** 29 जून प्रातःकाल

स्वाध्याय शिविर का संचालन स्वामी अमृतानन्द जी के सान्निध्य में किया जाएगा। शिविर के उपरान्त लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि स्थानों भ्रमण का भी कार्यक्रम रहेगा। स्थान सीमित हैं। भाग लेने के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

श्री ओमप्रकाश आर्य (9540077858) श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175)

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज वेद मन्दिर सीपी. ब्लाक, मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा, दिल्ली–34 को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जिसे यज्ञ, प्रवचन, वैदिक रीति स संस्कार आदि करवाने का अनुभव हो। पुरोहित से आर्यसमाज की सभी गतिविधियों में सम्मिलित होना अपेक्षित है। नियुक्ति के पश्चात् अर्यसमाज की ओर से आवास एवं अन्य सुविधाएं निःशुल्क दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव पूर्ण विवरण भेजकर सम्पर्क करें –

– व्रतपाल भगत, प्रधान
9968009433

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

प्राप्ति स्थान

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज भोगल (जंगपुरा)
हस्पताल रोड, नई दिल्ली–14

प्रधान : डॉ. जे. पी. गुप्ता
मन्त्री : श्री अविनाश चन्द्र धीर
कोषाध्यक्ष : श्री श्रवण कुमार वलेचा

आर्यसमाज सुन्दर विहार
दिल्ली–110 087

प्रधान : श्री कंवरभान क्षेत्रपाल
मन्त्री : श्री अमरनाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रह्लाद सिंह

आर्यसमाज टैगोर गार्डन विस्तार
नई दिल्ली–110 027

प्रधान : श्री अशोक आर्य
मन्त्री : श्री लाजपत राय आहूजा
कोषाध्यक्ष : श्री रमेश आर्य

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर